दुनिया और आखिरत का बयान

(मुस्लिम शरीफ हिन्दी की रिवायत का खुलासा है.)

मौलाना मुहम्मद इमरान कासमी बिज्ञानवी.
हिन्दी किताब एक हजार मुन्तखब हदीसे मुस्लिम शरीफ.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

1) रावी हज़रत अब्दुल्लाह बिन कैस रदी., रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- तकलीफ देह बातों को सुनकर अल्लाह तआला से जियादा सबर करने वाला कोई नहीं है, लोग अल्लाह तआला के लिये शरीक बनाते है और उस्का बेटा बनाते है और वोह इस्के बावजूद उन्को रिज़क देता है, आफियत के साथ रखता है और उन्को और जियादा नेमतें अता फरमाता है.

2) रावी हज़रत अनस रदी., रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- जिस जहन्नमी को दुनिया में सबसे जियादा नेमतें मिली होंगी उस्को कयामत के दिन बुलाया जायेगा और उस्को जहन्नम में एक गोता देकर पूछा जायेगा ए आदम के बेटे! क्या तुमने दुनिया में कभी कोई खैर देखी थी? वोह कहेगा नहीं ए मेरे रब. फिर जन्नत वालों मेसे

उस शख्स को लाया जायेगा जो दुनिया में सब्से जियादा तकलीफ में रहा होगा. उस्को जन्नत की झलक दिखाकर पूछा जायेगा ए आदम के बेटे! क्या तुमने दुनिया में कभी कोई तकलीफ देखी थी? वोह कहेगा नहीं ए मेरे रब! ना मुझे कभी कोई तकलीफ पहुंची और ना कभी कोई सख्ती पहुंची थी.

वज़ाहत- आखिरत की तकलीफें दुनिया की तकलीफों से बहुत जियादा है इसी तरह आखिरत का आराम भी दुनिया के आराम वा सुकून से बहुत जियादा है. यही वजह है की दुनिया में सुकून की ज़िन्दगी गुज़ारने वाला शख्स एक लम्हा जहन्नम में जाने के बाद दुनिया का हर आराम भूल जायेगा, और दुनिया में तकलीफें बरदाश्त करने वाला शख्स एक लम्हा जन्नत में जाने के बाद दुनिया की हर तकलीफ को भूल जायेगा. आप आखिरत की तकलीफों से बचने के लिये कसरत से खूब जियादा नेक आमाल करें.

3) रावी हज़रत अनस रदी., रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- जो मोमिन दुनिया में कोई भी नेकी करेगा अल्लाह तआला उसपर जुल्म नहीं करेगा, उस्को दुनिया में भी और आखिरत में भी ज्ज़ा दी जायेगी. रहा काफिर तो उसने दुनिया में जो नेकियों की है उन्का अजर उस्को

दुनिया में दे दिया जायेगा और जब वोह आखिरत में पहुंचेगा तो उस्को ज्ज़ा देने के लिये कोई नेकी नहीं होगी. अधिक तफसील के लिये पढिए तर्जुमा वा तफसीर सूरे बकरह/२,/१०२ और सूरे आले इमरान/३,/७७.

950 4) रावी हज़रत अनस रदी., रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- जब काफिर कोई नेक अमल करता है तो उस्की वजह से दुनिया से ही उसे लुकमा खिला दिया जाता है और मोमिन के लिये अल्लाह तआला उस्की नेकियों को आखिरत के लिये ज़खीरा करते रहते है और दुनिया में अपनी इताअत पर उसे रिज़्क अता करते है.

वज़ाहत- जो काफिर कुफर की हालत पर मर जाये, इस दुनिया में जो भी कोई नेकी की हो उस्का बदला आखिरत में नहीं, दुनिया में ही मिल चुका होता है, क्योंकि आखिरत में असल वज़न ईमान का होगा और आमाल उस्के ताबे होंगे. और मोमिन को ईमान की बदौलत दुनिया में भी उस्का बदला मिलता है और आखिरत तो है ही खास मोमिन के लिये. इसलिये ये दुआ रोज़ाना मांगिये "रब्बना आतिना फिददुन्या हसनतंव वा फिल आखिरति हसनतंव वा किना अज़ाबन्नार. तर्जुमा- ए हमारे रब! हमें दुनिया में भलाई दिज्ये और आखिरत में भी भलाई अता फरमाये,

और हमें जहन्नम के अज़ाब से निजात दिज्ये. (सूरे बकरह/२,/२०१)

5) रावी हज़रत कअब बिन मालिक रदी., रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- मोमिन की मिसाल सरकंडे (एक किस्म का जौ नुमा पौधा) के खेत की तरह है जिस्को हवा झोंका देती रहती है, कभी उस्को गिरा देती है और कभी खडा कर देती है यहां तक की वोह सूख जाता है. और काफिर की मिसाल सनोबर के पेड की तरह है जो अपनी जड पर खडा रहता है, कोई चीज़ उस्को इधर-उधर नहीं झुकाती, यहां तक की वोह जड से उखड जाता है.
वज़ाहत- मोमिन दुनिया में मुख्तलिफ परेशानियों और मुसीबतों में मुब्तला रहता है जिस पर या तो उस्के गुनाह माफ किये जाते है या दर्जे बलन्द किये जाते है, जबकि काफिर दुनिया में पुरसुकून ज़िन्दगी गुज़ारता है, अचानक मौत उस्की ज़िन्दगी का खातमा कर देती है जिस्के बाद वोह जहन्नम के अज़ाब में मुब्तला हो जाता है. एक हदीस में है, आप ﷺ ने फरमाया- दुनिया मोमिन के लिये कैदखाना और काफिर के लिये जन्नत है.

6) रावी हज़रत आईशा रदी., रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया- सीधी राह पर चलो, दरमियानी रास्ता

इख्तियार करों और एक-दूसरे को खुशखबरी दो, बेशक किसी शख्स को उस्का अमल जन्नत में दाखिल नहीं करेगा. सहाबा किराम (रदी) ने अर्ज़ किया ए अल्लाह के रसूल! आप्को भी नहीं? हुजूर ﷺ ने फरमाया- मुझे भी नहीं, मगर ये की अल्लाह तआला अपनी रहमत में मुझे छुपा ले, और याद रखो की अल्लाह तआला के नज़दीक सब्से पसन्दीदा अमल वोह है जिस्मे हमेशगी (यानी पाबन्दी से) हो, चाहे वोह अमल कम हो.

वज़ाहत- हमेशगी वाला अमल अल्लाह तआला को बहुत पसन्द है चाहे कम मिक्दार में हो, यानी नमाज़ रोज़ाना पढिए, इसी तरह दूसरी इबादतें भी किज्ये.

7) रावी हज़रत मुगीरा बिन शोबा रदी., रसूलुल्लाह ﷺ ने इस कदर (नफिल) नमाजें पढी की आपके कदम मुबारक सूज गये. हुजूर ﷺ से कहा गया आप इस कदर मशक्कत क्यों उठा रहे है, हालांकि अल्लाह तआला ने आपके अगले और पिछले गुनाहों की मगफिरत फरमा दी है. हुजूर ﷺ ने फरमाया- क्या में अल्लाह तआला का शुक्र गुज़ार बन्दा ना बनूं?

वज़ाहत- अल्लाह तआला की खूब जियादा इबादत करने से अल्लाह तआला का शुक्र अदा होता है.